International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 06, June- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

समाजिक–जनसांख्यिकीय चर पर आधारित समावेशी निर्देशों का उपयोग करने में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की प्रभावशीलता की तुलना करना

Jabar Singh, Research Scholar, Dept of Education, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand

Dr Meenu, Professor, Dept of Education, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand

सार

समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में सामान्य शिक्षकों को कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। सबसे पहले उन्हें विविध शिक्षार्थियों के बारे में संवेदनशील होने की आवश्यकता है, जिनका सामना उन्हे एक समावेशी सेटिंग में करना होगा। शिक्षकों के दृष्टिकोण और विश्वासों को बदलना और उनमें विशेष शिक्षा पर समावेशी शिक्षा के लाभों के बारे में जागरूकता पैदा करना इस क्षेत्र में किसी भी प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण का सार है। समावेशी प्रथाओं के लिए कौशल वृद्धि में प्रशिक्षण और विषय ज्ञान में सुधार और समावेशी कक्षा में प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए उपयोगी तरीके से विषय वितरण को प्रशिक्षण एजेंडा में केंद्रित किया जाना चाहिए। प्रशिक्षण सत्रों को शिक्षकों को शिक्षा से संबंधित विभिन्न नीतियों और कानूनों के बारे में और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लाभों के बारे में जानकारी प्राप्त करने में सक्षम बनाना चाहिए। एक शिक्षक के लिए कक्षा प्रबंधन तब कठिन हो जाता है जब विशेष आवश्यकता वाले बच्चे विशेष रूप से भावनात्मक गड़बड़ी और व्यवहार संबंधी समस्याओं वाले बच्चे समावेशी कक्षाओं में होते हैं। इसलिए इस पहलू में शिक्षक प्रशिक्षण भी महत्वपूर्ण हो जाता है। अन्वेषक ने इस अध्ययन के लिए उपयोग किए गए शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल को विकसित करने के लिए इन सभी पहलुओं को ध्यान से जोड़ा है। शिक्षक ऐसे योद्धा हैं जिनकी प्रथाओ पर बहिष्कार के खिलाफ समावेश की लड़ाई की सफलता निर्भर करती है और असंख्य अध्ययनों ने इस आधार का पता लगाया है। विकलांग व्यक्तियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और उपयुक्त समावेशी शिक्षण कौशल के साथ प्रशिक्षित शिक्षक शिक्षा की वर्तमान प्रणाली के लिए एक संपत्ति होगा और शैक्षिक परिदृश्य में नवाचार, गुणवत्ता और उत्कृष्टता के अग्रदूत के रूप में कार्य करेगा।

कुंजी शब्द : सामाजिक–जनसांख्यिकीय, शैक्षिक योग्यता, शिक्षण अनुभव समावेशी प्रथाआ, प्रभावशीलता.

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 06, June- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

परिचय

शिक्षण जितना लगता है उससे कहीं अधिक जटिल प्रक्रिया है। यह और भी चुनौतीपूर्ण हो जाता है जब शिक्षकों को पर्याप्त व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त किए बिना विशेष आवश्यकता वाले छात्रों की तरह व्यवहार करना पड़ता है। भारत में, समावेशी शिक्षा शिक्षा के अधिकार अधिनियम (1 अप्रैल, 2010) के लागू होने के साथ व्यापक रूप से प्रचलन में आ गई है, जो 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा को पड़ोस के स्कूल में निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा देती है। हालाँकि, इस अधिनियम ने इस तथ्य की देखरेख की है कि ऐसे नियमित स्कूलों में शिक्षक वे हैं जिन्हें विशेष डी.एड/बी.एड/एम.एड जैसे पाठ्यक्रमों में विशेष रूप से विशेष जरूरतों वाले बच्चों से निपटने के लिए प्रशिक्षित नहीं किया गया है। सिक्के का दूसरा पहलू यह है कि भारत में शिक्षा में डिप्लोमा (डी.एड), बी.एड और एम.एड जैसे पूर्व–सेवा शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम अपने आप में सैद्धातिक और अप्रचलित हैं और वर्तमान की मांगों को पूरा नहीं करते हैं। समावेशी युग। इन सभी के परिणामों का प्राथमिक शिक्षा प्रणाली पर सबसे अधिक दुर्बल करने वाला प्रभाव पड़ा है। विशेष रूप से पूर्व–प्राथमिक और प्राथमिक स्तर पर उपयुक्त चरण विशिष्ट व्यावसायिक प्रशिक्षण या अनुभव रखने वाले शिक्षक प्रशिक्षकों की अनुपस्थिति के परिणामस्वरूप अच्छी तरह से प्रशिक्षित प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की कमी हो गई है। भावी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को बीएड धारकों द्वारा पढ़ाया जाता है। किसी को यह नहीं भूलना चाहिए कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों को तैयार करने के लिए बी.एड एक बुनियादी पाठ्यक्रम है। अब समय आ गया है कि अधिकारियों को तर्क की तर्कहीनता का एहसास हो कि शैक्षिक पदानुक्रम में किसी की उच्च स्थिति किसी को विशेषज्ञता के विशेष संवर्ग द्वारा मांगे गए प्रासंगिक कौशल में प्रशिक्षित नहीं होने के बावजूद निचले स्तर पर काम करने वाले अन्य लोगों को प्रशिक्षित करने का अधिकार देगी।

इस तरह के सेवा–पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों की पेचीदगियां इस तथ्य से और बढ़ जाती हैं कि आवंटित शिक्षण अभ्यास सत्र उन्हें सामान्य बच्चों की जरूरतों को पूरा करने के लिए कौशल से लैस करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं, इसके सवाल को तो छोड़ ही दें, विशेष योग्यता वाले बच्चों को संभालने के लिए उन्हें तैयार करने के लिए जरूरत है। साथ ही, यह बच्चों की जरूरतों के प्रति सहानुभूति रखने की उनकी क्षमता को बढ़ाने के लिए केवल सीमित अवसर प्रदान करता है। ऐसे छात्र शिक्षकों को असामान्य रूप से सामान्य बच्चों के अलावा श्रवण बाधित, दृष्टिबाधित, अतिसक्रिय, शारीरिक रूप से विकलांग, ऑटिस्टिक और मानसिक रूप से विकलांग जैसे विविध शिक्षार्थियों के साथ एक समावेशी कक्षा द्वारा उत्पन्न चुनौतियों का प्रबंधन करना मुश्किल हो सकता है और इस तरह खुद को अयोग्य साबित कर सकते हैं। लम्बे समय में।

अपर्याप्त रूप से प्रशिक्षित प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षक और सीमित शिक्षण अभ्यास के साथ अप्रचलित शिक्षक

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 06, June- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भावी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के प्रशिक्षण में बहुत कम न्याय करते हैं और दुष्चक्र एक शिक्षक से दूसरे शिक्षक की अक्षमता की विरासत को आगे बढ़ाता है।

हमारे देश में सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण की भी कुछ ऐसी ही कहानी है। प्राथमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए क्म्ज् प्रमुख केंद्र हैं। प्राथमिक शिक्षा और साक्षरता पर वर्किंग ग्रुप (डब्ल्यूजी) की रिपोर्ट ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007–12) के अनुसार, स्वीकृत 556 जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) में से 466 कार्यरत हैं। फिर भी क्म्ज् अपने प्राथमिक कार्यों जैसे पूर्व और सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम और सामग्री विकास, शैक्षिक अनुसंधान, विस्तार, गैर–औपचारिक और वयस्क शिक्षा, योजना और प्रबंधन को पूरा करने के लिए पर्याप्त योग्य शिक्षकों की अत्यधिक कमी में खुद को पा रहा है। प्राथमिक स्तर पर प्रशिक्षण प्रदान करने वाले अन्य सरकारी या निजी प्रशिक्षण संस्थानों में पढ़ाने वाले शिक्षक शिक्षकों द्वारा भी यही समस्याएँ अनुभव की जाती हैं। प्राथमिक विद्यालय के शिक्षण में बुनियादी अनुभव की कमी, शिक्षक प्रशिक्षण और अनुसंधान में पेशेवर कौशल के साथ–साथ प्राथमिक शिक्षा प्रणाली के रुझानों और मुद्दों के बारे में जागरूकता की कमी ऐसे अयोग्य शिक्षको की अक्षमता को रंग देती है।

यदि सामान्य शिक्षकों को विकलांग और बिना विकलांग छात्रों को शिक्षित करने के लिए नियुक्त किया जाता है, फिर भी ऐसा करने के लिए सक्षम कौशल नहीं है; तो सभी छात्रों को परेशानी और असफल स्कूली अनुभव हो सकते हैं । उचित प्रशिक्षण का अभाव भी समावेशन के प्रति शिक्षकों के रवैये को प्रभावित करता है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले शिक्षक और सामान्य कक्षाओं में उनका दखल सफल समावेशन के रास्ते में सबसे कठिन बाधाएँ होंगी। विशेष आवश्यकता वाले बच्चा की प्रकृति और आवश्यकताओं के बारे में शिक्षकों की अज्ञानता से नकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। चूंकि सामान्य शिक्षकों के पास ऐसे बच्चों से निपटने के लिए वस्तुतः नगण्य अवसर होते हैं, ऐसे बच्चों के बारे में उनकी मान्यताएं और दृष्टिकोण आम तौर पर मिथकों और गलत धारणाओं से रंगे होते हैं। कई शिक्षकों का मानना है कि ऐसे बच्चे पूरी तरह से बेकाबू होते हैं और अपने व्यस्त कार्यक्रम के बीच एक बोझ बन जाते हैं। अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि नियमित स्कूलों में सामान्य शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण की कमी ने भी उनके बीच "समावेश" शब्द के अर्थ के बारे में व्यापक गलत व्याख्या और भ्रम पैदा किया है। प्राथमिक स्तर से ही शिक्षकों के लिए उचित प्रशिक्षण, इसलिए सामान्य कक्षाओं में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रभावी समावेशन के लिए समय की आवश्यकता बन जाती है।

अच्छी शिक्षण प्रथाएँ तभी स्पष्ट होती हैं जब शिक्षकों को पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित किया जाता है, उपयुक्त संसाधनों और समर्थन तक उनकी पहुँच होती है और उनकी कक्षाओं में विकलांग छात्रों को शामिल करने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण होता है। बताते हैं कि कुछ शिक्षकों के पास 'विविधता निर्देश के लिए दिल' होता है, लेकिन एक समावेशी कक्षा में अभ्यास करने के लिए आवश्यक ज्ञान और शिक्षण कौशल की कमी होती है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 06, June- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रारंभिक शिक्षा को गुणवत्ता प्रदान करने के लिए सभी हितधारकों को शामिल करते हुए सहभागी पाठ्यचर्या योजना जैसे कई कार्यों को नियोजित करके प्रारंभिक शिक्षक शिक्षा को उन्नत करने की तत्काल आवश्यकता है। पाठ्यक्रम का मॉड्यूलर संगठन; महत्वपूर्ण शर्तों में सिद्धांत को अभ्यास से जोड़ना सबसे बुनियादी और आवश्यक परिवर्तन है। पाठ्यक्रम में कौशल सीखने और अभ्यास के लिए अधिक समय का आवंटन, शिक्षक शिक्षा में तकनीकी, पाठ्यचर्या और संगठनात्मक पहलुओं के संबंध में प्रशिक्षण रणनीतियों और सामग्री के विकास के लिए एक पेशेवर दृष्टिकोण प्रदान करना अनिवार्य है।

समावेशी शिक्षा के आगमन के साथ सामान्य कक्षा में एक शिक्षक के सामने आने वाली चुनौतिया दस गुना बढ़ गई हैं। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, वर्तमान में उपयोग की जाने वाली शिक्षक प्रशिक्षण विधियाँ समावेशिता के संबंध में शिक्षकों के बीच सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने और एक समावेशी कक्षा में विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले बच्चों स निपटने के लिए उनके कौशल और क्षमताओं को बढ़ाने में अपर्याप्त प्रतीत होती हैं। उपरोक्त सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, अन्वेषक ने विकलांग व्यक्तियों के प्रति प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के साथ–साथ समावेशी प्रथाओं के लिए उनकी क्षमता बढ़ाने के लिए एक प्रशिक्षण मॉड्यूल विकसित करने की आवश्यकता महसूस की।

समावेशिता पर जोर देने वाली शिक्षा की वर्तमान प्रणाली इस अध्ययन को अत्यधिक महत्वपूर्ण बना देती है। अध्ययन विकलांग लोगों के प्रति प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के दृष्टिकोण को जानने में मदद करता है। यह समावेशी प्रथाओं में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की वर्तमान स्तर की प्रभावकारिता, पेशेवरों / माता–पिता के साथ सहयोग करने की क्षमता और एक समावेशी कक्षा में बच्चों के विघटनकारी व्यवहार से निपटने में सहायता करता है। इसके अलावा, यह कुछ सामाजिक–जनसांख्यिकीय चर जैसे आयु, लिंग, शैक्षिक योग्यता, शिक्षण अनुभव, स्कूल का स्थान, कक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की कुल संख्या, कक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की प्रकृति के साथ दृ ष्टिकोण और प्रभावकारिता के संबंध की जांच करता है। और कक्षा में कुल बच्चों की संख्या। यह जानकारी शिक्षाविदों और अधिकारियों को प्राथमिक शिक्षा की वर्तमान प्रणाली में समावेशिता के रुझानों और मुद्दों को समझने में मदद कर सकती है। रुझानों और मुद्दों का ज्ञान अधिकारियों को उचित निर्णय लेने और समावेशिता के दर्शन को पूरा करने के लिए आवश्यक सहायता सेवाएं प्रदान करने के लिए कदम उठाने में मदद कर सकता है।

कई सामान्य शिक्षक विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की प्रकृति या यहाँ तक कि वे कौन हैं, इस बारे में अनभिज्ञ होते हैं। उनमें से कई लोगों का यह झूठा विश्वास है कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों में केवल विकलांग बच्चे ही शामिल हैं। वर्तमान अध्ययन के लिए अन्वेषक द्वारा तैयार शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की ऐसी सभी अज्ञानता को दूर करने का प्रयास करता है। यह विशेष शिक्षा पर समावेशी शिक्षा के लाभों के बारे में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 06, June- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच जागरूकता पैदा करने में भी मदद करता है। समावेश की सफलता के लिए मौलिक है शिक्षक द्वारा कक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चे की स्वीकृति। इस बात को ध्यान में रखते हुए अध्ययन में उपयोग किए जाने वाले प्रशिक्षण मॉड्यूल का इस तरह से तैयार किया गया है ताकि विकलांग व्यक्तियों के प्रति शिक्षकों के नकारात्मक रवैये को बदला जा सके। केवल वे शिक्षक जो विविधता को महत्व देते हैं और उनका सम्मान करते हैं और साथ ही विशेष आवश्यकता वाले बच्चों पर सामाजिक वर्जनाओं द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों को समझते हैं, बहिष्कार और भेदभाव का मुकाबला करने के लिए सामाजिक एजेंट बन सकते हैं।

अनुसंधान क्रियाविधि

यह अध्याय वर्तमान अध्ययन के लिए अपनाई गई पद्धति का संक्षिप्त विवरण प्रदान करता है। यह अपनाई गई शोध की विधि, अध्ययन में प्रयुक्त जनसंख्या और नमूना, प्रयुक्त उपकरण और तकनीक और डेटा संग्रह की प्रक्रिया का वर्णन करता है। यह अध्ययन से संबंधित डेटा के विश्लेषण के लिए लागू सांख्यिकीय तकनीकों की रूपरेखा भी देता है।

अन्वेषक ने वर्तमान अध्ययन के लिए एकल समूह पूर्व–परीक्षण पश्च–परीक्षण प्रयोगात्मक डिजाइन का उपयोग किया। अध्ययन के पूर्व–परीक्षण और परीक्षण के बाद के भाग के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया था, क्योंकि यह वर्तमान स्थिति से संबंधित डेटा एकत्र करने, मानक मानदंडों के साथ मौजूदा स्थिति की तुलना करने और मौजूदा स्थितियों में सुधार करने में उपयोगी है। इस अध्ययन में सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग अध्ययन के नमूने से संबंधित सामाजिक–जनसांख्यिकीय चर, जैसे शिक्षक की आयु; उनका लिंग, शैक्षिक योग्यता, शिक्षण अनुभव; स्कूल का स्थान, कक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की संख्या, कक्षा में बच्चों की प्रकृति और कक्षा में कुल बच्चों की संख्या। इसका उपयोग प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के दृष्टिकोण और कथित प्रभावकारिता के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए भी किया गया था

डेटा संग्रह के लिए प्रक्रिया

अध्ययन की शुरुआत विकलांग लोगों के प्रति प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के रवैये और विकलांग लोगों के प्रति दृ ष्टिकोण (एटीडीपी) पैमाने और समावेशी प्रथाओं के लिए शिक्षक प्रभावकारिता (टीईआईपी) पैमाने का उपयोग करके समावेशी प्रथाओं के लिए उनकी प्रभावकारिता के सावधानीपूर्वक माप को शामिल करते हुए हुई। फिर प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को प्रायागिक उपचार से अवगत कराया गया, अर्थात; अन्वेषक द्वारा विकसित मॉड्यूल का उपयोग करते हुए शिक्षक प्रशिक्षण। बाद में ।ज्क्च और ज्म्प्च पैमानों को फिर से विषयों के लिए प्रशासित किया गया

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 06, June- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ताकि उनके दृष्टिकोण और प्रभावकारिता में सुधार के लिए शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल क प्रभाव का पता लगाया जा सके। इसके अलावा, प्रशिक्षण के बाद शिक्षक व्यवहार और कक्षा अभ्यासों पर प्रतिक्रिया एकत्र करने के लिए प्रतिभागी शिक्षकों के छात्रों के साथ एक फोकस समूह चर्चा आयोजित की गई।

आबादी

केरल के तिरुवनंतपुरम और कोल्लम जिलों के स्कूलों में प्राथमिक कक्षाओं में छात्रों को पढ़ाने वाले सभी शिक्षक इस अध्ययन की जनसंख्या का गठन करते हैं।

नमूना

अध्ययन के नमूने में केरल के दो जिलों अर्थात् तिरुवनंतपुरम और कोल्लम के 200 प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक शामिल हैं। नमूने में 10 फोकस समूह चर्चाओं में दोनों जिला के शिक्षकों के 50 छात्रों को भी शामिल किया गया। रैंडम सैंपलिंग तकनीक का इस्तेमाल क्रमशः तिरुवनंतपुरम से 100 शिक्षकों और कोल्लम से 100 शिक्षकों का चयन करने के लिए किया गया था। फोकस समूह चर्चा के लिए नमूनाकरण विभिन्न चरणों के माध्यम से किया गया था। सबसे पहले, 200 शिक्षकों में से तिरुवनंतपुरम के 5 और कोल्लम के 5 शिक्षकों को यादृच्छिक रूप से चुना गया था। फिर, इन 10 शिक्षकों में से प्रत्येक के 5 छात्रों का एक यादृच्छिक चयन किया गया, जिसमें छात्रों का नमूना 50 तक था। चुनिंदा सामाजिक–जनसांख्यिकीय चर के आधार पर प्रयोग के लिए चुने गए नमूने का वितरण तालिका 3.1 में प्रस्तुत किया गया है।

परिणाम और चर्चा

इस अध्ययन के लिए विकसित प्रशिक्षण मॉड्यूल शिक्षकों द्वारा छात्रों के लेबलिंग और वर्गीकरण को हतोत्साहित करने का प्रयास करता है ताकि छात्र लेबल द्वारा निर्धारित सीमाओं तक ही सीमित न हों और अपनी अधिकतम क्षमता को उजागर न करें। यह इस तथ्य पर भी प्रकाश डालता है कि शिक्षक की अपेक्षा छात्र के परिणाम के सीधे आनुपातिक होती है। यह इस तथ्य को सामने लाता है कि शिक्षक वही अपेक्षा करते हैं जो वे अपने छात्रों से प्राप्त करते हैं। यह शिक्षक का ज्ञान, विश्वास और मूल्य हैं जो विद्यार्थियों के लिए एक प्रभावी सीखने का माहौल बनाते हैं, जिससे शिक्षक का एक महत्वपूर्ण प्रभाव बनता है। समावेशी शिक्षा और समावेशी स्कूल का विकास । इस अध्ययन के हिस्से के रूप में विकसित प्रशिक्षण मॉड्यूल विशेष रूप से विकलांग बच्चों के विशेषाधिकार को बहाल करने में एक लंबा रास्ता तय करता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 06, June- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

तालिका 1

उम्र के संबंध में समावेशी निर्देशों का उपयोग करने में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की प्रभावकारिता के अंकों का माध्य मान और मानक विचलन

Age Group	Mean	SD
Below 30 Years	30.13	1.871
30 - 45 Years	28.34	2.712
Above 45 Years	31.33	2.877

तालिका 1 से पता चलता है कि समावेशी निर्देशों का उपयोग करने में प्रभावकारिता स्कोर 45 वर्ष से अधिक (31. 33± 2.877) और 30 वर्ष से कम (30.13 ±) वाले शिक्षकों में अधिक है। (1.871) 30–45 वर्ष की आयु (28.34± 2. 712) के बीच की तुलना में।

तालिका 2

उम्र के संबंध में समावेशी निर्देशों का उपयोग करने में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की प्रभावकारिता के एक तरफ़ा एनोवा का सारांश

Source	Sum of Squares	df	Mean Square	F - value	p – value
Between Groups	303.2	2	151.6	21.750**	0.000
Within Groups	1373	197	6.971		
Total	1677	199			

''0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 06, June- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ऊपर दी गई तालिका इंगित करती है कि पी–मान 0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण है; समावेशी निर्देशों और आयु का उपयोग करने में प्रभावकारिता के बीच का अंतर महत्वपूर्ण है।

तालिका 3

उम्र के संबंध में समावेशी निर्देशों का उपयोग करने में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की प्रभावकारिता के स्कोर की जोड़ी के अनुसार तुलना के लिए न्यूनतम महत्वपूर्ण अंतर (एलएसडी) परीक्षण

Age Group (I)	Age Group (J)	Difference (I-J)	p – value
Below 30 Years	**30 - 45 Years**	1.795**	0.001
Below 30 Years	**Above 45 Years**	1.191	0.063
30 - 45 Years	**Above 45 Years**	2.987**	0.000

''0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण

तालिका पुष्टि करती है कि प्रभावकारिता स्कोर '30 वर्ष से कम' और '45 वर्ष से ऊपर' आयु समूहों में लगभग समान है और जब इन आयु समूहों की तुलना '30–45 वर्ष' आयु वर्ग से की जाती है तो यह काफी अधिक है।

तालिका 4.

प्राथमिक विद्यालय के प्राप्तांकों का माध्य मान और मानक विचलन

लिंग के संबंध में समावेशी निर्देशों का उपयोग करने में शिक्षकों की प्रभावकारिता

Gender	Mean	SD	t – value	df	p - value
Male	29.25	2.651	0.182	198	0.856
Female	29.18	3.053			

तालिका दर्शाती है कि 0.05 स्तर पर च–मान सार्थक नहीं है; समावेशी निर्देशों और लिंग का उपयोग करने में प्रभावकारिता के बीच का अंतर महत्वपूर्ण नहीं है। तालिका से पता चलता है कि पुरुष शिक्षकों (29.25 ± 2.651) और महिला शिक्षकों (29.18 ± 3.053) में प्रभावकारिता स्कोर लगभग समान है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 06, June- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

तालिका 5

प्राथमिक विद्यालय के प्राप्तांकों का माध्य मान और मानक विचलन

शैक्षिक योग्यता के संबंध में समावेशी निर्देशों का उपयोग करने में शिक्षकों की प्रभावकारिता

Educational Qualification	Mean	SD
Higher Secondary with TTC	31.03	2.864
Graduation	28.40	2.154
Post-graduation	29.10	3.098

तालिका से पता चलता है कि स्नातकोत्तर (29.10 ± 3.098) को तुलना में टीटीसी (31.03 ± 2.864) के साथ उच्च माध्यमिक योग्यता वाले शिक्षकों में प्रभावकारिता स्कोर अधिक है।

और स्नातक (28.40 ± 2.154)।

तालिका 6

समावेशी निर्देशों का उपयोग करने के संबंध में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की प्रभावकारिता के स्कोर के एक तरफ़ा ANOVA का सारांश शैक्षिक योग्यता

Source	Sum of Squares	df	Mean Square	F – value	p – value
Between Groups	160.5	2	80.26	10.429**	0.000
Within Groups	1516	197	7.696		
Total	1677	199			

''0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 06, June- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

तालिका से पता चलता ह कि पी–मान 0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण है; समावेशी निर्देशों और शैक्षिक योग्यता का उपयोग करने में प्रभावकारिता के बीच का अंतर महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

समावेशी प्रथाओं में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की प्रभावकारिता बढ़ाने में मॉड्यूल अत्यधिक उपयोगी होगा। यह शिक्षकों को विभिन्न विषयों में समावेशी निर्देशों को प्रभावी ढंग से डिजाइन करने, जीवन कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने और एक समावेशी कक्षा में बच्चों के बीच मूल्यों को विकसित करने के लिए प्रशिक्षित करता है। यह शिक्षकों को विभिन्न मूल्यांकन प्रक्रियाओं से भो परिचित कराता है। मॉड्यूल अन्य पेशेवरों के साथ सहयोग करने, शिक्षक–माता–पिता की साझेदारी और शिक्षक को समुदाय से जोड़ने की आवश्यकता पर भी जोर देता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मॉड्यूल प्राथमिक शिक्षकों के बीच विभिन्न नीतियों और विधानों के बार में जागरूकता पैदा करता है। कानूनों और नीतियों के बारे में शिक्षकों के बीच जागरूकता पैदा करना बड़े पैमाने पर ज्ञान के प्रसार का सबसे अच्छा तरीका है। शिक्षक सामाजिक परिवर्तन के सबसे अच्छे साधन हैं जो अपने ज्ञान को छात्रों, अभिभावकों और समाज को बड़े पैमान पर प्रचारित कर सकते हैं। नीतियों और विधानों के बारे में जागरूकता से शिक्षकों को अज्ञानी माता–पिता को सरकार द्वारा उनके विशेष जरूरतों वाले बच्चों को दिए गए अधिकारों, प्रावधानों और लाभों के बारे में जानकारी देने में मदद मिल सकती है।

ग्रंथ सूची

1. श्नाइडर, बी.एच. (2020)। सामाजिक रूप से पीछे हटने वाले / चिंतित शुरुआती किशोरों और उनके दोस्तों की बातचीत का अवलोकन अध्ययन। जर्नल ऑफ चाइल्ड साइकोलॉजी एंड साइकेट्री, 50, 799–806।
2. स्क्रूग्स, टी.ई., और मास्ट्रोपिएरी, एम.ए. (2020)। 'टीचर परसेप्शन ऑफ मेनस्ट्रीमिंग इक्लूजन, 1958–1995: ए रिसर्च सिंथेसिस'। असाधारण बच्चे, 63: 59–74।
3. स्क्रुग्स, टो।, और मास्ट्रोपिएरी, एम। (2020)। 2020 की मुख्य धारा/समावेश की शिक्षक धारणाएँ: एक शोध संश्लेषण। असाधारण बच्चे, 63, 59–74।
4. स्क्रूग्स, टी.के. मास्ट्रोपिएरी, एम.ए., और मैकडफी, के.ए. (2020)। समावेशी कक्षाओं में सह–शिक्षण: गुणात्मक शोध का एक मेटा–संश्लेषण। असाधारण बच्चे, 73, 392–416
5. सेमेल, एम.आई., एबरनेथी, टी.वी., बुटेरा, जी., और लेसर, एस. (2020)। नियमित शिक्षा पहल की शिक्षक धारणाएं। बच्चे को छोड़कर, 58(1), 9–24।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 06, June- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

6. पटनम, जे.डब्ल्यू। (2021)। सहकारी शिक्षण और समावेशन के लिए रणनीतियाँः कक्षा में विविधता का उत्सव। पॉल एच. ब्रुक्स पब्लिशिंग कंपनी, इंक.
7. रेडिवोजेविक, डी., और जेरोटिजेविक, एम. (2021)। समावेशी शिक्षा के लिए ओपन सोसाइटी टीम के लिए सर्बिया फंड में समावेशी शिक्षा। तत्जाना स्टोजिक रीजनल वर्कशॉप – यूरोप ऑन इनक्लूसिव एजुकेशन, सिनाया, रोमानिया।
8. रेड्डी, जी. और सुजातामालिनी, जे. (2021). विशेष विद्यालय के शिक्षकों की जागरूकता, दृष्टिकोण और दक्षताएँ। एडुट्रैक, 6(4).
9. रेसर, आर। (2021)। विकलांग बच्चों के लिए शिक्षक शिक्षाः साहित्य समीक्षा। यूनिसेफ, आरईएपी परियोजना।
10. रेनॉल्ड्स, एम। (2021) समावेशन के लिए शिक्षा, शिक्षक शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण एजेंसी मानक। जर्नल ऑफ इन–सर्विस ट्रेनिंग, 27 (3)।
11. रीज़र, आर., और पुघ, ए. (2021)। दक्षिण अफ्रीका में समावेशी शिक्षा का विकास करना। डचनउंसंदहं, ळनंजमदह, पूर्वी केप और पश्चिमी केप में दस प्राथमिक विद्यालयों में समावेशी अभ्यास विकसित करने के बारे में फिल्म, वर्ल्ड ऑफ इंक्लूजन और रेडवेदर प्रोडक्शंस द्वारा बनाई गई।
12. ओचाई, जीओ (2021)। गाइडेड डिस्कवरी मेथड का उपयोग करके बच्चों को पारंपरिक अधिकार और प्रथा सिखाना। एक समावेशी सेटिंग यूबीई स्कूलों में सीखने की अक्षमता वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए क्षमता निर्माण कार्यशाला में एक वर्कशॉप पेपर प्रस्तुत किया गया।